विरोध और समर्थन के बीच जीएसटी

सरकार पूरे धूमधाम के साथ वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) को आज एक जुलाई से पूरे देश में लागू करने जा रही है। लेकिन इसकी लॉन्चिंग के लिए आयोजित कार्यक्रम अब शायद थोड़ा फीका रह जाए, क्योंकि देश की प्रमुख विपक्षी पार्टियां इससे बाहर रहने का निर्णय कर चुकी हैं। सरकार द्वारा तय की गई रूपरेखा के मुताबिक 80 मिनट का यह कार्यक्रम शुक्रवार को रात करीब 10.45 पर शुरू होगा। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के संबोधन से पहले वित्त मंत्री अरुण जेटली एक परिचयात्मक भाषण देंगे। रात को ठीक 12 बजे जीएसटी को लॉन्च किया गया। तय हुआ था कि मंच पर राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के अलावा उप-राष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और एचडी देवगौड़ा मौजूद रहेंगे। लेकिन अब मनमोहन सिंह मंच पर नहीं होंगे, क्योंकि कांग्रेस ने कार्यक्रम से दूर रहने का फैसला किया है। ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस की नेता और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इसे केंद्र सरकार की ऐतिहासिक भूल बताते हुए कार्यक्रम के बहिष्कार की घोषणा पहले ही कर चुकी हैं। अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी का भी यही स्टैंड है। इन्होंने जीएसटी के विरोध में टेक्सटाइल इंडस्ट्री के प्रदर्शन का हवाला देते हुए कहा है कि सरकार इसे टाल दे क्योंकि फिलहाल देश इसके लिए पूरी तरह तैयार नहीं है। कांग्रेस भी मानती है कि इससे छोटे व्यापारियों और बुनकरों को नुकसान हो सकता है। लेकिन इसके साथ ही कार्यक्रम के स्वरूप पर भी उसे एतराज है। उसका कहना है कि राष्ट्रपति के मौजूद रहते जीएसटी को प्रधानमंत्री लॉन्च करें, यह ठीक नहीं है। यह प्रेजिडेंट की गरिमा के अनुकूल नहीं है। सचाई यह है कि जीएसटी को पास कराने में सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष का भी हाथ भी रहा है। लेकिन अब अचानक उसका पैर पीछे खींचना अटपटा लग रहा है। जहां तक जीएसटी के विरोध का प्रश्न है, तो यह अप्रत्याशित भी नहीं है। हर नई योजना का विरोध तो होता ही है। फिर हर वर्ग की शिकायत सुनने की जिम्मेदारी जीएसटी परिषद की है। वह समय के साथ सबकी शिकायतें दूर करने की कोशिश करेगा। ऐसे में बेहतर होता कि अपोजिशन भी इस अभूतपर्व अवसर का हिस्सा बनता। दरअसल सत्ता पक्ष का रवैया उसे दुविधा में डाल रहा है। आज सत्ता पक्ष सीमा पर की गई सैनिक कार्रवाई से लेकर विदेश नीति तक अपनी हर पहल का एकतरफा फायदा लेता है। वह सामूहिक कार्यों को भी अपनी निजी उपलब्धि की तरह पेश कर रहा है। जीएसटी किसी एक सरकार का नहीं बल्कि हमारी व्यवस्था द्वारा जनता को दिया गया एक तोहफा है। बेहतर होगा कि सरकार कोशिश करके सभी दलों को इस आयोजन में शामिल होने के लिए प्रेरित करे।

टमाटर हुए लाल

जो लोग हफ्ते भर की सब्जी एक ही दिन खरीद कर फ्रिज भर लेते हैं, उन्हें इस बार टमाटर का भाव पूछने पर तमाचा लगने का एहसास हुआ होगा। हफ्ते भर में यह बढ़कर डेढ़ गुना और पखवाड़े में दो गुना हो गया है। दिल्ली-एनसीआर में टमाटर 60 से 80 रुपए किलो बिक रहा है। वजह पूछने पर दुकानदार आगे से माल महंगा आने की बात कह रहे हैं, जबकि आढ़तिये बता रहे हैं कि हरियाणा में तेज गर्मी के बाद अचानक हुई बारिश ने सारा यज्ञ विध्वंस कर रखा है। यही टमाटर मुंबई में 35-40 रुपए किलो बिक रहा हो तो दिल्ली में इसकी कीमत दोगुनी क्यों होनी चाहिए? इससे एक बात तो तय है कि कीमतों में लोकल चढ़ाव के अलावा यहां कुछ मामला जीएसटी लॉचिंग के चलते ट्रांसपोर्टरों के स्लोडाउन का भी हो सकता है। बहरहाल, कृषि उपजों की कीमतों को लेकर देशभर में चल रहे किसानों के आंदोलन को ध्यान में रखते हुए हम यहां टमाटर के बहाने एक गहरी पड़ताल भी कर सकते हैं। हमारे यहां रसोई ज्यादातर आलू, प्याज और टमाटर से ही चलती है और इन तीनों का इस साल भारत में रेकॉर्ड उत्पादन दर्ज किया गया है। आज ही बीत रहे 2016-17 के टमैटो सीजन (जुलाई से जून) में पिछले साल के मुकाबले 15 फीसदी की बढ़त दिखाई गई है। इसके बावजूद आज बाजार से टमाटर खरीद कर लाना हमें अय्याशी जैसा लग रहा है। प्याज की बात करें तो मध्य प्रदेश की सरकार ने हाल में किसान आंदोलनों के दबाव में आठ रुपया किलो प्याज किसानों से खरीदकर पड़ोसी राज्यों में दो-तीन रुपया किलो के हिसाब से डंप कर दिया है।

क्या वाजपेयी और आडवानी की तरह साईड लाइन किए जा सकते हैं मोदी

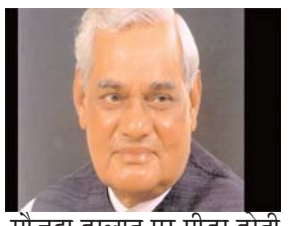

क्या आगे चलकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी उनकी पार्टी वरिष्ठ नेता अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी की तरह साईड लाइन कर सकती है? भाजपा का मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ यह कतई नहीं चाहता कि हिंदू सम्राट के रुप में उसने जिसकी छवि गढ़ कर देश के सर्वोच्च लोकतांत्रिक पद पर पहुंचाया है वह किंचित मात्र भी हिंदुत्व के एजेंडे से परे जाए। संघ प्रचारक से लेकर पंद्रह साल तक गुजरात के मुख्यमंत्री और फिर तीन साल से प्रधानमंत्री तक के अपने सियासी सफर में यूं तो मोदी की छवि एक आदर्श हिंदू नेता की रही है। वे हिंदुत्व के एजेंडे को फालो करते रहे हैं मगर बीच बीच में अचानक उन्हें इससे भटकते देख लोग भौंचक रह जाते हैं। अब यह उनके जैसे कद्दावर कुशल राजनीतिज्ञ की सहज स्वाभाविक वैचारिक अभिव्यक्ति है या फिर राजनीतिक रणनीति? यदि भारत के धर्म निरपेक्ष और बहुलतावाद के पक्ष में गाहे बगाहे उनकी स्वीकारोक्ति उन्हें आम जनमानस में एक सर्व स्वीकार्य नेता के रुप में खड़े कर सकती है तो दूसरी ओर अपने दोनों अग्रज और दिग्गज नेताओं की तरह हाशिए में जाने पर भी मजबूर कर सकती है। हाल ही में गौ रक्षा पर अपने बयान को लेकर मोदी फिर कांग्रेस के साथ अपने लोगों के निशाने पर हैं। भाजपा और कथित गौरक्षक उनके इस बयान से मायूस हैं। महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम के सौ साल पूरे होने पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि गौ रक्षा के नाम पर इंसान को मार देना कतई बर्दाश्त नहीं है। मुल्क में गाय के नाम पर बढ़ती हिंसक घटनाओं पर दुख जताते भावुक होते हुए उन्होंने कहा कि क्या हमें गाय के नाम पर किसी इंसान को मारने का हक मिल जाता है ? क्या ये गो भक्ति है, क्या ये गो रक्षा है। ये गांधी विनोबा का रास्ता नहीं हो सकता । हम कैसे आपा खो रहे हैं। क्या मरीज की मौत हो जाए तो हम अस्पताल में आग लगा देंगे¸डाक्टरों से मारपीट करेंगे ? हम क्या कर रहे हैं, इन चीजों को आज बढ़ावा मिल रहा है। मौजूदा हालात पर पीड़ा होती है। इस तरह की हिंसा पर सालभर में यह उनका चौथा बयान है । इसके पहले भी मोदी ने गौरक्षा के नाम पर हिंसा करने वालों को लताड़ लगाई थी जिसके बाद गौरक्षकों ने उन्हें आड़े हाथों लिया था। इस बार भी इस वर्ग के नेता उनके बयान से जहां खिन्न हैं वहीं कांग्रेस ने इसे राजनीतिक स्टंड बताते घड़ियाली आंसू बहाने वाला बयान बताया है। कांग्रेस प्रवक्ता मनीष तिवारी ने तंज कसा है कि पीएम को खुद से पूछना चाहिए कि किसने इस देश में अराजकता का माहौल बनाया। वहीं महात्मा गांधी के पोते गोपाल कृष्ण गांधी ने कहा कि बयान सही है,लेकिन इसका जमीनी तौर पर भी कार्रवाई के साथ पालन किया जाना चाहिए। सालभर से बार बार मोदी का इस तरह से देश के संप्रभु और धर्म निरपेक्ष सामाजिक सद्भाव के ढांचे के पक्ष में बयान देना राजनीतिक रणनीति है, जनता और पद का नैतिक दबाव है या फिर उनकी सहज आत्म स्वीकारोक्ति ? वक्त के साथ यह देखना दिलचस्प होगा । बहरहाल आरएसएस नीत अपनी पार्टी में अब तक हिंदू ह्दय सम्राट की छवि बनाने वाले मोदी यदि वाकई बदल रहे हैं तो उनका हश्र भी आगे चलकर इस लीक पर चलने वाले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी और उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवानी की तरह हो सकता है। वाजपेयी ने गुजरात दंगों पर बतौर प्रधानमंत्री तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को बेबाकी से नसीहत देते हुए राजधर्म की याद दिलाते हुए दंगों को दुर्भाग्यजनक बताते दुख जताया था। हालांकि अपने पूरे राजनीतिक सफर में वाजपेयी की छवि कभी भी कट्टर हिंदू नेता की नहीं रही। समाजवादी सोच के होने से उनके बारे में लोग कहते थे कि एक अच्छा नेता गलत पार्टी में है। मगर वे आखिर तक पार्टी के प्रति निष्ठावान रहे । किंतु अपनी सांप्रदायिक सद्भाव की छवि की कीमत उन्हें चुकाने चुकानी पड़ी । धीरे धीरे उन्हें नेपथ्य में धकेला जाने लगा। इसी तरह भाजपा के संस्थापक और इसे स्टैंड करने वाले आडवानी ताजिंदगी कट्टर संघी रहे मगर उम्र ढलने, देश की संस्कृति के साथ प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति बनने की राजनीतिक महत्वाकांक्षा के साथ उन्हें यह एहसास हो चला कि गंगा जमुनी तहजीब की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। इसके चलते उन्होंने इसकी स्वीकारोक्ति जिन्ना की कब्र पर यानी ऐसी जगह पर की जहां से यह पैगाम सारी दुनिया में गया। मगर उनकी पार्टी इसे हजम नही कर पायी और यहीं से उन्हें साईड लाइन कर मोदी को आगे बढ़ाने का काम संघ और पार्टी से शुरु किया । सियासी पराभव देखिए कि आज पार्टी में राष्ट्रपति पद के सबसे प्रबल संभावित दावेदार मोदी अपने प्रतिद्वंद्वी घोषित प्रत्याशी रामनाथ कोविंद का समर्थन करने मजबूर हैं। अपने समय के इन कद्दावर नेताओं की तरह हालांकि फिलहाल प्रधानमंत्री मोदी की स्थिति नहीं है उम्र और लोकप्रियता व सियासत के हिसाब से राष्ट्रीय राजनीति में अभी उनकी शुरुआत है। पार्टी उन्हें लंबी रेस का अश्वमेघी घोड़ा मान कर चल रही है। मगर जिस हिसाब से वे संघ नीत भाजपा की हिंदुत्व की विचारधारा से बीच बीच में भटकते दिख रहे हैं, उन्हें भी धीरे धीरे वाजपेयी और आडवानी की तरह साईड लाइन किया जा सकता है। उनकी जगह अगले चुनाव में योगी आदित्यनाथ को कमान दी जा सकती है जिस तरह उन्हें यूपी का सीएम बनाया गया। संघ ने ऐसा करके उनकी छवि तराशने का काम शुरु कर दिया है। क्योंकि संघ कभी नहीं चाहेगा कि जिसे प्रधानमंत्री के पद पर अपने एजेंडे को पूरा करने के लिए बिठाया है वह परे जाए। अब सवाल यह है कि क्या देश की धर्म निरपेक्षता या मुस्लिमों के पक्ष में मोदी का बयान देना उनकी राजनीतिक मजबूरी और सुनियोजित रणनीति है या फिर वाकई उनका आत्मज्ञान जाग उठा है। क्या उन्हें भी प्रधानमंत्री जैसे शीर्ष पद पर बैठे यह एहसास होने लगा है कि सांप्रदायिक सद्भाव और बहुलतावाद ही भारत की संस्कृति है। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। यानी वक्त के साथ एहसास और परिपक्वता के चलते वे अपनी पार्टी की एकपक्षीय विचारधारा से असहमत होते जा रहे हैं? यह हकीकत है,भ्रम है या फिर सियासत? विपक्ष का कहना है कि मोदी की बयानबाजी राजनीतिक और घड़ियाली आंसू हैं? तो क्या वाकई में उनकी नजर मुस्लिम वोट बैंक पर है। दो साल बाद लोकसभा चुनाव, और इसके पहले मध्यप्रदेश, राजस्थान व छत्तीसगढ़ जैसे दर्जनभर राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। पार्टी मोदी के बूते मुस्लिम वोट बैंक हथियाकर फिर से केंद्र और राज्यों की सत्ता पर काबिज होना चाहती है। बिहार दिल्ली,पंजाब हारने के बाद और मुश्किल से यूपी जीतने के बाद पार्टी को क्या यह एहसास हो चला है कि मुस्लिम वोट के बिना जीत मुश्किल है। मोदी के स्टैंड बदलने की एक वजह यह भी हो सकती है कि तीन साल में गाय चर्बी,अखलाक, पानसरे, दाभोलकर , कन्हैया, पशुवध हेतु बिक्री बंद, गौर रक्षको के मुस्लिमों पर हमले, पाकिस्तान विरोध,कलाकारों के पुरस्कार लौटाने जैसे असहिष्णुता और हिंसा मुद्दों से देश और सरकार की दुनिया में तेजी से बिगड़ती छवि। मोदी जिस हिसाब से दुनिया में जा रहै हैं और बड़े बड़े नेता भारत में अराजकता, असिष्णुता के लिए नुक्ताचीनी कर रहे हैं,जिससे प्रधानमंत्री पर बदलने के लिए दबाव प्रतीत होता है। देश में ऐसे माहौल में पूंजी निवेश नहीं होने की भी उन्हें चिंता है। बहरहाल उनका यह बदलाव खुशफहमी है, गलतफहमी है या फिर एक सच्चाई है, यह वक्त ही बताएगा।

विकास या महंगाई?

मैं बहुत आत्मविश्वास से यह कहने की पोजीशन में नहीं था कि हमारा देश विकास कर रहा है लेकिन जब से मीडिया में विज्ञापनों की आंधी आई है कि वाकई में पिछले 3 सालों में भारत में विकास हुआ है और उपलब्धियां जनता-जनार्दन को बताई जा रही हैं, तब से मुझे लग रहा है कि शायद मैं ही अल्पज्ञानी हूं। सरकार बेचारी देश का निर्माण भी करे और ऊपर से इस नासमझ जनता को करोड़ों रुपये खर्च कर यह भी बताये कि देख भइये हमने इतना निर्माण कर दिया और तुझे इल्म ही नहीं है। अनायास मालवीय जी देवदूत की तरह प्रकट हुए। मैंने कहा-और महाराज, विकास आज 3 बरस का हो गया। वे बोले-विकास की तो शादी भी हो ÷ई श्रीमान और उसका लड़का भी अब 4 का हो गया है। मैंने कहा-नादानों जैसी बातें मत करिये बाबू, आप अख़बार इत्यादि नहीं बांचते क्या? सिर्फ 10 से 5 वाली नौकरी में ही अपना जीवन व्यर्थ किये हुए हो, सरकार विगत 3 वर्षों से विकास भी कर रही है और तो और लोगों को पकड़-पकड़ कर विकास के बारे में बता भी रही है और एक आप हैं, जिन्हें होश ही नहीं है? उन्हें बाबू संबोधन इसलिए बुरा नहीं लगा क्योंकि बाबू ऐसे-ऐसे प्रताप दिखा चुके हैं कि वहां पहुंचना शायद उनके बस में नहीं। हां 10 से 5 वाली बात में अलबत्ता सत्यता थी पर इस बात से वे पूर्णतः असहमत थे कि उन्हें होश नहीं है। उन्होंने कहा-सारे के सारे समाचार पत्र तो यहां कह रहे हैं कि जनता को सब्ज़बाग़ दिखाकर ठगा गया है, सिर्फ जुबानी पटाखे फोड़े गए हैं, काले धन के इंतज़ार में लो÷ों की आंखें पथरा रही हैं और आप कहना चाह रहे हैं कि हमारा देश विकास कर रहा है? मैंने कहा-आप बहुत सतही बातें कर रहे हैं। आप ही मुझे बताइये 3 बरस पहले आप कितने रुपयों में किराना-सब्ज़ी लाते थे? वे बोले-यही कोई 200-250 में काम चल जाता था। मैंने कहा-अब सोचिये आप 1000 रुपये तक का किराना-सब्ज़ी लेने लगे हैं, ये विकास नहीं तो और क्या है। वे चीखते हुए बोले-महाराज, इसे विकास नहीं, महंगाई कहा जाता है। मैंने कहा-नजरिये का फर्क है, आपके लिए जो महंगाई है वो सरकार के लिए शायद विकास है, देश में सौ और पांच सौ के नोट का फर्क मिट रहा है और आप कह रहे हैं विकास नहीं है। वे बोले-देखिये विकास तो चहुंओर हो रहा है। माननीय विदेशी पर्यटन कर रहे हैं, लोकतांत्रिक सरकारें गिराई जा रही हैं, किसान आत्महत्या कर रहे हैं और क्या-क्या क्या गिनाऊं आपको? मुझे यह महसूस हुआ कि वाकई मेरा सामान्य ज्ञान ही कम है। मुझे इस बात का भी इल्म हो चला है कि जनता-जनार्दन को सरकारी उपलब्धियां गिनवाने की ज़रूरत ही नहीं होना चाहिए, यदि वाकई सरकार जनता-जनार्दन तक पहुंची हो तो।

धर्मग्रंथों का सार

प्रेरक - प्रसंग

एक राजा ने अपने मंत्री से किसी विद्वान को बुलाने को कहा, जो सभी धर्मग्रंथों का सार समझा सके। कई पंडित बुलवाए गए। वे वेद-वेदांग, व्याकरण, साहित्य, कोष, न्याय आदि विषयों के विद्वान थे। अपने साथ वे अनेक धर्मग्रंथ भी लेकर आए। राजा ने कहा- पंडितजनो, इतनी बातें सुनने के लिए मेरे पास समय नहीं है। यदि आप संक्षेप में धर्मग्रंथों का सार सुना दें, तो आपकी अति कृपा होगी। पंडितों ने अपनी-अपनी बातें कहीं, लेकिन अंत में एक पंडित ने यह कहकर राजा का दिल जीत लिया कि करोड़ों धर्मग्रंथों का सार मात्र इतना ही है कि दूसरों पर उपकार करना पवित्र और श्रेष्ठ कार्य है तथा दूसरों का शोषण और उत्पीड़न करना घृणित एवं नीच कार्य है।

राशिफल

मेष-आज अचानक ही वाहन और आवास संबंधी समस्याएं सिर उठा सकती हैं। शुभ संदेश आने से उत्साह बढ़ेगा और मित्रों का सहयोग भी प्राप्त होगा।

वृष- किसी पराक्रम के कार्य और पुरूषार्थ की योजनाएं बनेंगी और मित्रों का सहयोग बना रहेगा। कोई चल या अचल संपत्ति का पारिवारिक विवाद निपटाना आवश्यक होगा। आर्थिक पक्ष भी सुदृढ़ होगा और मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी।

मिथुन- लाभकारी समय है युक्ति और व्यवहार से सब कुछ पा सकते हैं। जटिलताएं खत्म होगी। कनिष्ठ सदस्यों अथवा संतान पक्ष के कारण परेशानी होगी। खान पान में परहेज करना ही युक्ति संगत है अन्यथा अपच अजीर्ण का प्रभाव रहेगा।

कर्क- कुछ आर्थिक और पारिवारिक संकोच अभी आपको दबाव में रखेंगे। परिवर्तन की आकांक्षा भी रहेगी। अधिक उत्साह और तत्परता से कार्य बिगड़ सकता है। शुभ संदेश भी आएगा व पुराने मित्रों से मुलाकात होगी।

सिंह- पारिवारिक परेशानियां सिर उठा सकती हैं। आर्थिक लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी से अनबन के कारण व्यवहार में परिवर्तन करना होगा। आपके द्वारा किए गए कार्यों का विरोध होगा।

कन्या- दौड़ भाग और परिश्रम के बाद वांछित लाभ होगा। कार्यक्षेत्र की प्रक्रियाओं में व्यस्तता रहेगी। दूर की यात्रा भी करनी पड़ सकती है। मानसिक परेशानी के चलते मन कुंठाग्रस्त रहेगा। कुछ अधूरे कार्य आपको निपटाने होंगे। प्रियजनों से भेंट होगी। व्यय की पूर्ति होगी।

तुला- सहज ही सभी काम समय पर बनते नजर आएंगे। अच्छे दिनों का संयोग मन को प्रफुल्लित करेगा। व्यापार व व्यवसाय से संबंधित कई अनुभव होंगे। व्यापार व व्यवसाय से जुड़े जातकों की विभिन्न क्षेत्रों में साख बढ़ेगी।

वृश्चिक- उत्सव व त्योहार में सम्मिलित होने के अवसर प्राप्त होंगे। अच्छे भोजन से स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। मित्रों व बंधुजनों के कारण तनाव होने से घर में भी क्लेश की स्थिति पैदा हो सकती है। शुभ समाचार का आना लगातार जारी रहेगा।

धनु- कार्यक्षेत्र में आपकी धाक जमेगी व एक के बाद एक मामले सुलझते चले जाएंगे। धर्म कर्म के प्रति श्रद्धा जागृत होगी और किसी महान हस्ती के दर्शन लाभ भी होंगे। उदर और आंख के कष्ट के कारण स्वास्थ्य प्रभावित होगा जिससे कार्यक्षेत्र में अस्थिरता रहेगी।

मकर- जटिल कार्य पूरे होंगे और लाभदायक उपक्रमों का संचालन भी होगा। मानसिक उलझनों के कारण सिरदर्द की आशंका रहेगी या फिर संतान पक्ष की चिंता रहेगी। पड़ोसियों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है।

कुंभ-व्यर्थ के संदेह और तर्क वितर्क में समय और धन की हानि होगी। नियोजित कार्यक्रम भी सफल होंगे और आर्थिक लाभ का सुअवसर भी आएगा। पितृपक्ष से लाभ की आशा रहेगी। किसी फिल्मी हस्ती से मेल मुलाकात होगी।

मीन-पक्ष और विपक्ष के लोगों का सहयोग मिल सकता है। किसी महत्वाकांक्षी योजना की शुरुआत होगी। अकारण पड़ने वाले व्यवधान से लाभ मार्ग प्रभावित होगा। परिश्रम की आवश्यकता है, जिससे सक्रिय हुए विरोधी परास्त होंगे। व्यय भार बढ़ेगा।

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं

1. कतार, क्रम, पांत 2. लज्जत, जायका 4. कारण, वजह 7. सुंदर प्रतीत होना, सुखद होना 8. घोड़े आदि का मल 9. अक्सर, ज्यादातर 10. चक्की में पीसना, मसलना, कुचलना 12. धनुष, फौजी टुकड़ी 13. आभूषण, जेवर 15. लहरों का चक्कर, जलावर्त, भ्रमर 17. बायां, विरुद्ध 18. गाना, नगमा 19. लाचार, विवश 22. नमन, प्रणाम 25. चौकी, थाना 26. इकरार, समझौता, ठेका 27. अधिकार होना, सामर्थ्य होना (मुहा.)।

ऊपर से नीचे

1. एक प्रदेश जिसकी राजधानी चंडीगढ़ है 2. हविर्दान के समय उच्चारित एक शब्द, भष्म 3. दन-दन करते हुए 5. बलशाली, बलवाला 6. परिवर्तित करना, पहले से भिन्न हो जाना 7. चांद, चंद्रमा, रजनीश 11. अप्रिय, अरुचिकर 14. मैं का बहुवचन 15. भंगेड़ी, भंग करने वाला, झाड़ू लगाने तथा मैला साफ करने वाला 16. मातृभूमि, स्वदेश 19. मक्खन, माखन 20. बुढ़ापा, धन, ज्वर 21. टालना, हटाना, बहाना करके हटाना 23. सीमा, हद 24. सौ का पाचंवा हिस्सा 25. घोड़े के पैरों में लगाने का लोहे का टुकड़ा, पौधे आदि का डंठल।

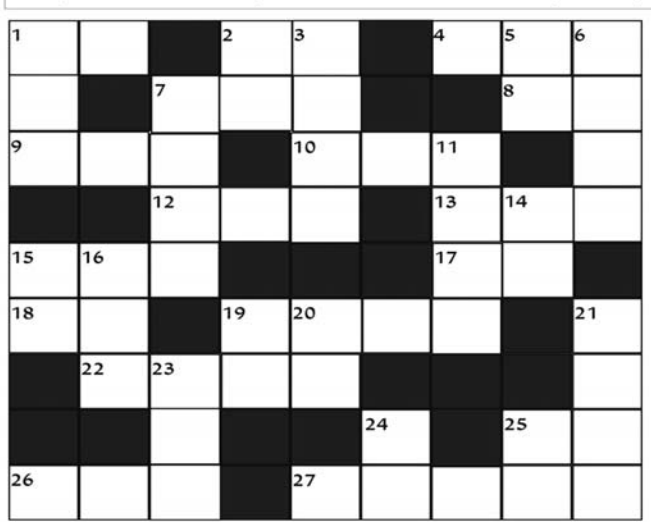

पिछले अंक का हल

वि	ज	य		ब	नि	या		दे
वा		ती	त	र		रा	जी	व
ह	मा	म		स	प	ना		ता
	न				टा			
दा	व	त		वि	ना	श		अ
य		ह	त्या			ह	र्जा	ना
रा	ह	त		न	ज	र		व
	वा				मी		ना	श्य
दु	ला	रा		जा	न	की		क

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 98 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6